Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July-December 2023 4(2), 2289–2293

CHANGING FORM OF TRIBAL ARTS
जनजातीय कलाओं का बदलता स्वरूप

Shalini Dhama [1]

[1] Assistant Professor, Department of Lalit Kala, Ch. Charan Singh University, Merrut, Uttar Pradesh

Corresponding Author
Shalini Dhama,
shalini197615@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i2.2023.3588

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: People generally consider tribal arts as synonymous with "rural culture" whereas it is the culture of those people who are part of a community. It is the product of human culture. India is a country full of many states, traditions and cultures. Tribal people of many religions and communities live in it. They have their own traditions and culture. Because every person lives in society and is an integral part of the society. Therefore, their activities and arts are also connected to the society. Folk art is considered to have originated with human life. Art has always been with man as his companion.

Hindi: जनजातीय कलाओं को लोग साधारणतया "ग्रामीण संस्कृति" का पर्याय मान लेते हैं जबकि यह उन लोगों की संस्कृति है जो किसी समुदाय का हिस्सा हाते हैं। यह मानव संस्कृति की उपज है। भारत एक अनेक राज्यों व परम्पराओं और संस्कृतियों से भरा पूरा देश है। जिसमें अनेको धर्म व समुदाय के जनजातीय लोग रहते हैं। उनकी अलग परम्परा व संस्कृति है। क्योंकि हर जनमानस समाज में रहता है और समाज का अभिन्न अंग होता है। इसलिए उनकी क्रियाकलाप व कलाएँ भी समाज से जुड़ी होती है। लोेक कला का जन्म मानव जीवन के साथ ही माना जाता है। मानव की सहचरी के रूप में कला सदा ही उसके साथ रही है।

1. प्रस्तावना

जनजातीय कलाओं को लोग साधारणतया "ग्रामीण संस्कृति" का पर्याय मान लेते हैं जबकि यह उन लोगों की संस्कृति है जो किसी समुदाय का हिस्सा हाते हैं। यह मानव संस्कृति की उपज है। भारत एक अनेक राज्यों व परम्पराओं और संस्कृतियों से भरा पूरा देश है। जिसमें अनेको धर्म व समुदाय के जनजातीय लोग रहते हैं। उनकी अलग परम्परा व संस्कृति है। क्योंकि हर जनमानस समाज में रहता है और समाज का अभिन्न अंग होता है। इसलिए उनकी क्रियाकलाप व कलाएँ भी समाज से जुड़ी होती है। लोेक कला का जन्म मानव जीवन के साथ ही माना जाता है। मानव की सहचरी के रूप में कला सदा ही उसके साथ रही है।

लोक कला का अर्थ लोकमन या जनजीवन की सहज अभिव्यक्ति से है। लोककला की तकनीक भी अत्यन्त सरल होती है। लोककलाकार किसी चित्रकला संस्थान में जाकर शिक्षा प्राप्त नहीं करता किसी सिद्धान्त व शैली की जटिलता में नहीं पड़ता। कलाकार अपने-अपने ढंग से एक ही कला रूप की नकल करते है इसी कारण लोक समाज में पीढ़ियों तक प्राचीन आकृतियों की अनुकृतियाँ होती रहती है। लोककला धर्म तथा अलौकिक भावनाओं एवं अंधविश्वासों से बहुत अधिक प्रभावित लोक-समाज में परिवार समूह, समाज, खेती आदि सभी के लिए धार्मिक अनुष्ठान किये जाते हैं प्रत्येक धार्मिक

कृत्य पर आकृतियों का निर्माण किया जाता है। इसी कारण लोक समाज में पीढ़ियों तक प्राचीन आकृतियों की अनुकृतियाँ होती रहती है। अतः हम कह सकते है कि भारत में लोक कला को स्त्रियों ने जीवित रखा है।

लोक कलाओं का विकास विभिन्न रूपों में हमारे सामने आया है। लोक कला का प्रथम स्वरूप प्रतीकात्मक है जो हमें गुफाओं व शिलाओं (स्वास्तिक चिन्ह) आदि से प्राप्त हुआ है।

क्योंकि लोककला का उद्भव ग्राम्य जीवन से होता है। यह कला एक वर्ग व समुदाय की नहीं होती है। इसलिए यह हर परम्परा धर्म, व रीति-रिवाज का द्योतक है। भारत में सभी राज्यों की कला अलग-अलग नामों से जानी जाती है। बंगाल की फड चित्र, अल्पना उत्तर प्रदेश की चैक पूरना सांझी, विहार-मधुबनी, राजस्थान-मंडाना, महाराष्ट्र-वर्ली, आन्ध्र प्रदेश की कलमकारी, महाराष्ट्र में रंगोली, गुजरात मे पिथोरा, मध्य प्रदेश की गोदना, गुजरात की बांधनी (बंधाई और रंगाई की तकनीक) आदि प्रसिद्ध लोक कलाएँ है। किसी भी क्षेत्र या स्थान की जातियों व जनजातियों में पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही पारम्परिक कलाओ को लोककला कहते है। इस कला मे आमतौर पर कुल देवता का भी चित्रण होता है। हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीर प्राकृतिक नजारे जैसे सूर्य व चन्द्रमा, धार्मिक पेड़-पौधे जैसे तुलसी व बड़, पीपल आदि अधिक मात्रा में बनाये जाते हैं।

इन कलाओ में परम्परागत रीति से स्थानीय सामग्री का प्रयोग होता है। देशी औजारों की सहायता से अपने खुद के हाथों से जो सुन्दर सौन्दर्य पूर्ण वस्तुएँ तथा सामग्रियां लोकोपयोग के लिए बनाई जाती है। आजकल सभी लोक कलाओ का रूप बदलते स्वरूप में दिखाई देता है। सर्वप्रथम हम मिथिला की लोक चित्रकला यहाँ कर्णाट वंश की स्थापना के बाद चैदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दी ई० से भू-चित्रण अरिपण तथा भित्ति चित्रण का अनुष्ठान स्त्रियाँ विभिन्न अवसरों पर किया करती थीं। आरम्भ में चैरठ (चावल का आटा) और सिन्दूर से अरिपण रचा जाता था। दीवारों पर चित्रण के लिए प्राकृतिक स्रोतो के रंगो को व्यवहार में लाया जाता था। धीरे-धीरे इस कला में लोक रूचि का विकास हुआ और विवाह एवं उपनयन संस्कारों के महत्वपूर्ण अवसरों के साथ ही प्रत्येक पर्व-त्यौहार पर अरिपण तथा भित्ति चित्र अलग-अलग रचे जाने लगे। भित्ति चित्रों की रचना के लिए विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक एवं खनिज रंगों की खोज की गई और इसमें विविध रंग प्रयुक्त होने लगे। अरिपण में भी चावल के आटे का स्थान खनिज रंगों और विविध फूल-पत्तियों ने ले लिया। खासकर तान्त्रिक मान्यताओं पर आधारित कोहबर की रचना स्त्रियाँ बड़े मनोयोग से करने लगीं और इस कला में जिसे प्रवीणता हासिल होती, वह दूसरी स्त्रियों को इसकी रचना का प्रशिक्षण देती। इस प्रकार यहाँ की स्त्रियों ने कुशल भाव से अपनी कला-वृत्तियों को जागृत रखा और विरासत के रूप में यह कला अपनी बेटियों को सिखाई। बाद में अट्ठारहवीं शताब्दी में यहाँ पर चित्रों और कुण्डलित चित्रों की रचना खादी वस्त्रों पर की जाने लगी। इन चित्रों में राजा सल्हेस, नयका, बनजारा, लोरिकायन आदि महागाथाओं के चित्रांकन किए जाते थे, जिनका प्रदर्शन पुरूष चितेरे स्वयं महागाथाओं को गाकर करते थे। गाथाओं को गाने में तीन-चार कलाकारों की एक मण्डली होती थी, जिनमें एक धूना और चिवकारा वाद्य यन्त्र बजाता था, दूसरा महागाथाओं को गाता था और तीसरा कुण्डलित पर चित्रों की ओर संकेत करके उनके अर्थ समझाता था। मगर अब कुण्डलित पट चित्र की यह परम्परा यहाँ समाप्त हो चुकी हैं।

महागाथाओं के चित्रांकन अब अलग-अलग प्रसंगों को लेकर अलग-अलग कागज पर किए जा रहे हैं। भित्ति चित्रांकन जैसा श्रमसाध्य कार्य अब कम हो रहा है। कोहबर चित्रांकन तो पहले से सामन्तों के घरों में होता था-अब भी यह किसी-किसी सम्पन्न परिवार के घरों में ही होता है।

मिथिला पेंटिंग

लोककला जब अपने चर्म पर पहुची तो 1962 से कलाकार भास्कर कुलकर्णी मधुवनी (बिहार) आये और उन्होंने पाँच स्त्री कलाकारों को चुनकर उनके हाथ में कागज ब्रुश और रासायनिक रंग दिये और उनके सृजन कार्य के लिए प्रोत्साहित किया। धीरे-धीरे यह कला इतनी विकसित हुई कि प्रसिद्ध शहरों तक फैल गयी अब यहाँ पर कपड़े पॉट, आदि पर प्रचलित हो गयी- अब मुम्बई और दिल्ली में सिल्क स्क्रीन से छापकर इसे कला-उत्पाद के रूप

में बेचा जाने लगा। पोस्टर कला, वाटर कलर, एक्रिलिक कलर और इनेमल पेन्ट से भी दीवार कागज, कपड़े, लकड़ी, सनमाईका आदि पर भी इसकी रचना की जाने लगी। कला-संसाधनों के इस बड़े बदलाव के कारण इसकी रचनात्मक मौलिकता प्रभावित हुई। आज भी जब हम वनस्पति रंगों या खनिज रंगों, धागों, सींक, रूई के फाहे आदि से परम्परागत तरीके के निर्मित किसी कृति को देखते हैं तब इसका अहसास होता है कि इसका मौलिक स्वरूप कितना प्रभावशाली रहा है। आज इस कला से जुड़ी हुई कई हजार स्त्रियाँ नामांकित हो गई हैं, मगर इनमें से लगभग सौ स्त्रियों की पहचान ही मिथिला की कला के लोक कलाकार के रूप में की जा सकती हैं चूँकि ज्यादातर नामांकित स्त्रियाँ इस कला के मर्म को ठीक से पहचान नहीं पायी हैं। इनकी रेखाएँ, रंग, रूपाकार तथा विन्यास केवल सजावटी दिखते हैं और खासकर पटना, दिल्ली या मुम्बई में रहकर काम कर रही ज्यादातर स्त्रियाँ तो मिथिला कला के नाम पर लोगों को ठग रही हैं। अतः इनमें हो रहे कला-संसाधनों के बदलाव को हमें समझना होगा कि ये कलाकार धागे में रंग भिगोकर रेखाएँ और आकार निर्मित करने की जगह परमानेण्ट मार्कर का प्रयोग कर रहे हैं। यह उनकी सृजनशीलता के लिए अपेक्षित हैं। संसाधनों के बदलाव से इनकी कला की मौलिकता बहुत प्रभावित होती है। विषयों के बदलाव देशकाल की परिस्थितियों के अनुरूप कहीं स्वीकार किए जा सकते हैं। अब शान्ति देवी यदि मधुबनी के गाँव से निकलकर जर्मनी या जापान जाती हैं तो जाहिर है, हवाई अड्डे के दृश्य या जर्मनी के कोई दृश्य इनकी कला के विषय हो सकते हैं। मगर जो स्त्रियाँ मधुबनी के गाँवों में बैठे कपोल-कल्पित बदलाव कर रही हैं, वह स्वाभाविक नहीं है। फिर ऐसी कृति को स्वीकार करना सहज नहीं होता।

मधुबनी पेंटिंग

उत्तर प्रदेश में मथुरा और वृन्दावन के मन्दिरों तथा आस-पास के घरों में सांझी चित्रांकन के लिए अब मिट्टी की ऊँची वेदी प्रायः निर्मित नहीं होती। यहाँ अब समतल पर ही स्टेंशिल या मुक्त हस्त से रंग बुरादों से चित्रांकन किए जाते हैं। कम्प्यूटर की सहायता से बनाए गए स्टेंशिल का उपयोग भी किया जा रहा है। अरारोट के बारीक और हल्के रंग की जगह संगमरमर के भारी बुरादे वाले रंगों के इस्तेमाल किए जा रहे हैं, जो हल्की हवा में नहीं उड़ते। इस तरह यहाँ एक सकारात्मक बदलाव दिखता है। गुजरात मैं गारोड़ा चित्रकला के कुण्डलित पट भी अब रासायनिक रंगों और सेन्थेटिक फाइवर तूलिकाओं से बनाए जा रहे हैं। गुजरात के ही बड़ौदा जिले के छोटा उदेपुर क्षेत्र में भिलाला राठवा और नामक जनजातियों की देव पिथौरा चित्रकला एक आनुष्ठानिक समूह चित्रकला हैं यह इनकी चुनौतियाँ पूरी होने पर, बुराई को जीवन से दूर भगाने के लिए तथा देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए घर के बरामदे की दीवार पर अंकित की जाती है। यह चित्रांकन पास के गाँवों से आए लेखक चितेरों का एक समूह मिलकर लगातार चैबीस घण्टे में खनिज तथा वनस्पति रंगों से करता है। इसमें बड़े फलक पर हाथी, घोड़े, पालकी, शिकार के दृश्य, हल, बैल, जंगली हिंसक पशु, देवी-देवता आदि चित्रित किए जाते हैं। इसमें देव-पिथौरा बाबा के कल्प चित्र विविध रूपों में अंकित किए जाते हैं। इसमें हाथी पर सवार गणेश को हुक्का पीते हुए दर्शाया जाता है। परन्तु अब जो बदलाव पिथौरा चित्रांकन में नजर आता है, इसमें गणेश सिगार जैसी कोई चीज पी रहे हैं। पिथौरा बाबा कार में सवार हैं या साईकिल पर जा रहे हैं। आनुष्ठानिक क्रिया में धूप-गुग्गुल की जगह खुशबूदार अगरबत्ती जलाई जा रही है और दीवार पर की गई लेप के बाद उस पर एक्रिलिक रंगों से चित्रांकन किए जा रहे हैं। बहरहाल यह एक समृद्ध जन-जातीय रंग उत्सव है, जिसे हम मिथिला चित्रकला की तरह ही समृद्ध पाते हैं।

बंगाल में कालीघाट की पटवा चित्रकला का जादू अब खत्म हो चुका है। मगर कुछ कलाकार जो आज भी पटवा चित्रांकन में लगे हैं, वे एक चित्र तो अब भी तीन मिनट में बना लेते हैं मछली खाती बिल्ली या अन्य विषयों के लेकिन ये रासायनिक रंगों से अब साधारण कागज पर बना रहे हैं आधुनिक तूलिकाओं से इसी तरह के बदलाव, मध्य प्रदेश के मालवा की 'चित्रावण' कला, जो शादी-विवाह के अनुष्ठानों के समय प्राईमरी रंगों द्वारा दीवार पर की जाती है। इसमें भी हुए है। उत्तर प्रदेश की कुमाउँनी, तथा आन्ध्र प्रदेश की लोक-कलाओं में भी देश-काल की परिस्थितियों के अनुरूप बदलाव हुए होंगे।

पटवा पेंटिंग

अब हम सौरा और बरली जैसी दो चर्चित जनजातीय कलाओं पर प्रकाश डाले। उड़ीसा के कोरापुट तथा गन्जाम जिले एवं आन्ध्र प्रदेश के श्रीकाकुलम जिले के पर्वतीय वनांचल सौरा जनजाति का निवास स्थान है। इनके पत्थर और मिट्टी के बने घर के गोबर और हल्की पीली मिट्टी से चिकनी की गई दीवार पर चूने पत्थर से निर्मित सफेद रंग से चित्रांकन किया जाता है। इसमें ये बीमारियों से मुक्ति, जादू-टोने के माध्यम से संचारित कष्ट से छुटकारा तथा कभी आराधना के साथ चित्रांकन करते हैं। मगर कोरापुट के पास के गाँवों में सौरा चित्रांकन में मोटर साइकिल सवार और ट्रैन पर सवार लोग भी प्रदर्शित किये जा रहे हैं तथा बन्दूक उठाए जनान्दोलनकारी भी। उनके मानसिक बदलाव को दर्शाता है। सौरा चित्रकला के समरूप ही महाराष्ट्र और गुजरात की वरली जनजाति की भित्ति-चित्रण परम्परा है। इसमें पद्धति और रंग एक समान है। वरली चित्रों का अंकन मुख्य रूप से विवाह के अवसर पर किया जाता है। फिर वर्षा के बाद गौर त्यौहार के अवसर पर यह चित्रांकन किया जाता है। विवाहित स्त्रियों द्वारा पाहट्या चित्र अंकित किया जाता है। मगर वरली के इस चित्रांकन में भी विमान, छतरी आदि कुछ रूपाकारों के प्रवेश हो चुके हैं। इन कलाओं में यह बदलाव कितना प्रासंगिक है, यह विचारणीय है।

2. निष्कर्ष

अतः इस तरह के बदलावों से मुझे लगता है कि इन लोक जनजातीय कलाओं के आत्म-रूप में बिखराव के खतरे को समझा जा सकता है। यह अपनी पारम्परिक लोक कला के स्वरूप की सुन्दरता को हमेषा के लिए खो न दें। इस लोक कला के वास्तविक स्वरूप को बचाये रखने के लिए हमें गम्भीरता से विचार करके कुछ न कुछ कदम उठाने चाहिए। तभी हम अपनी लोक कला के वास्तविक रूप व सौन्दर्य को सुरक्षित रख पायेंगे।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Graphic Design, Narendra Yadav, p. 29
Modern Indian Painting, Girraj Kishore, p. 210-219
Contemporary Art of India, Pran Nath Mago, translated by Samitra Mohan, p. 61-63
Kala Vilas, R.A. Agarwal, p. 220
https://hinditutor.in/lok-kala
https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%AD%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A4%A4%E0%A5%80%E0%A4%AF_%E0%A4%B2%E0%A5%8B%E0%A4%95_%E0%A4%95%E0%A4%B2%E0%A4%BE
https://images.app.goo.gl/JVSvJrUDNTjVhvQCA
https://images.app.goo.gl/rDpGUHBuwTLwRr6j9
https://images.app.goo.gl/7jvSW6en9Neob1ni8